एक सफर सवालों के बीच

❑ जरफिशां जैदी

अपने निकट परिवेश को मानवीय नजरिये से देखने भर की बात है कि जीवन के अनेक मर्मस्पर्शी प्रसंग खुलने लगते हैं । ऐसे में यदि आप किसी के दुख-दर्द में सहभागी बनते हैं, किन्हीं जरूरतमन्दों की मदद करना चाहते हैं या कोई सामाजिक कार्यभार तय करते हैं तो वह भी सहज नहीं होता - उसमें भी कई अवरोध और चुनौतियां आती हैं । लेकिन हमारा संकल्प दृढ़ है और नजरिया साफ है तो अवरोधों से पार पा सकते हैं, चुनौतियों से जूझ सकते हैं । यह प्रक्रिया खुद हमारे व्यक्तित्वान्तरण की जमीन है । प्रस्तुत अनुभव इस बात का साक्ष्य है जिसका पूर्वार्द्ध आप गतांक में पढ़ चुके हैं । इस जीवंत, मार्मिक और प्रेरक अनुभव का उत्तरार्द्ध यहां प्रस्तुत है ।

(गतांक से आगे)

दूसरे दिन कॉलेज जाते वक्त मैं बच्चों के घर गई ।

- शायदा बाजी मेरे इम्तहान आ रहे हैं इसलिए मैं अब नहीं पढ़ा पाऊंगी । कुछ हालात ऐसे हैं कभी पढ़ा सकी तो वापस शुरू करूंगी । दो महीने बाद स्कूल खुलेंगे । आप छोटे बच्चों को तो भर्ती करवा दीजिएगा ।

- अच्छा जरफिशां बैठो चाय पीकर जाना ।

- नहीं बस चलती हूँ ।

अन्दर की कोठरी में से पापू और शाजी निकल कर आए और मेरा हाथ पकड़कर बोले - बैठिये बाजी, चाय पीकर जाना। मैं ना नहीं कर सकी । मैं बैठने लगी।

- रूकिए बाजी ।

पापू मुझे कहकर अन्दर चला गया और चादर का एक बड़ा सा टुकड़ा ले आया।

- एक मिनिट बाजी इस पर बैठिये ।

आस-पास के कपड़ों बिस्तरों को हटाकर उसने इतनी जगह बना दी कि वो चादर बिछ सके । मैं बैठ गई ।

- पापू । अन्दर से शायदा बाजी की आवाज आई । पापू जल्दी से अन्दर गया फिर एक मिनट में दरवाजे से बाहर चला गया ।

- पापू कहां जा रहे हो ?

- बस अभी आया बाजी ।

सात-आठ मिनट में वापस आया। एक हाथ में दूध की थैली और दूसरे में एक अखबार की पुड़िया थी । पलक झपकते अन्दर चला गया । अन्दर से स्टोव के जलने की आवाज आने लगी ।

- पापू आज आप कारखाने नहीं गए ?

- बाजी बस जा ही रहा था । भाईजान तो गया । अभी वो भी आ रहा है ।

थोड़ी देर में दो कप चाय और एक प्लेट में नमकीन डालकर शायदा बाजी ले आई ।

- आप खामाख्वाह परेशान हुई ।

- नहीं, परेशानी की क्या बात है, खाइए ।

मैने थोड़ी से नमकीन उठाली । इतने में शाहिद बंटी और सिकन्दर भी आ गए ।

- आदाब बाजी ।

- आदाब, आओ । वो शर्माते हुए अन्दर चले गए ।

- आपके बच्चे पढ़ने में अच्छे हैं । दो महिने बाद शाजी और सिकन्दर को स्कूल में भर्ती करवा दीजिएगा । अच्छा मैं चलती हूँ ।

- बाजी, कल से नहीं आएं ? पापू ने पूछा।

- अब मैं आपको पढ़ा नहीं पाऊंगी । ये नैतिक शिक्षा की किताब आप अपने आप पढ़ियेगा । शाहिद को किताब देकर में जल्दी से घर के दरवाजे से निकली और लूना स्टॉर्ट कर ली ।

बस फिर मैं अपने इम्तहान की तैयारी करने लगी । दो महीने उसमें गुजर गए और तकरीबन महीने भर इम्तहान चलते रहते । इन तीन महीनों में वो कभी भी मुझसे मिलने नहीं आए। इम्तहान खत्म हुए 10-15 दिन हो गए । मैं अपनी फुफ्फीजान के यहां जा रही थी कि रास्ते में शाहिज, शाजी और पापू मिले।

- सलाम वालेकुम बाजी ।

- बालेकुम अस्सलाम, कैसे हैं आप लोग? अच्छे हैं ।

- कहां से आ रहे हो ?

- कारखाने से । बाजी शाजी को स्कूल में भर्ती करवा दिया है मगर सिकन्दर स्कूल नहीं जाता ।

- क्यों ?

- उसका दिल नहीं लगता । अम्बर सिनेमा बन्द हो गया। अब पापा खुद का काम करते हैं ।

- क्या काम ?

- सिनेमा की मशीनें सुधारते हैं । बाहर भी जाते हैं । अच्छे पैसे मिल जाते हैं ।

- अच्छा कभी घर पर आना।

- आएंगे बाजी ।

एक महीने बाद मेरा रिजल्ट आया । मम्मी को लग रहा था कि बच्चों को इम्तहान वक्त में नहीं पढ़ाया इसलिए मेरा फर्स्ट डिवीजन बना है । खैर मैंने यूनिवर्सिटी में एडमीशन ले लिया । जब एक दिन यूर्निवसिटी से लौटी तो देखा चारों भाई घर के बाहर खड़े हैं, साफ सुथरे कपड़े, पैरों में हवाई चप्पल और चेहरों पर रौनक बता रही थी कि इन नौ-दस महीनों में इनके हालात पहले से बेहतर हो गए हैं । उन्हें इस तरह देखकर खुशी हुई ।

- अरे ! यहां कैसे खड़े हो, अन्दर चलो, बहुत दिनों बाद आए ।

- बाजी हमेशा सोचते हैं कई बार बाहर से होकर चले जाते हैं ।

- क्यों ?

शरम आती है ?

- जब मन करे आ जाया करो। आप लोगों का काम कैसा चल रहा है ?

- अच्छा, शाहिद तो अब डेढ़ हजार रुपये महीना का लेता है।

- क्या करते हो पैसों का ?

- अम्मी को दे देता हूँ ।

- मैं आप लोगों के लिए चाय बनाकर लाती हूँ ।

चाय पीते हुए मैंने पूछा-शाजी तुम्हारा स्कूल कैसा चल रहा है ?

- बाजी ये तो अब दिल्ली जा रहा है ।

क्यों ?

- बड़ी खाला ले जा रही हैं ।

- अच्छा पढ़ाई मत छोड़ना ।

- जी बाजी चलते हैं ।

- अच्छा, फिर आना ।

इस तरह दिन गुजरते रहे और हालात बदलते रहे । पिछले पांच साल में पांचों काफी बड़े हो गए। शाहिद जो मेरे कन्धे पर

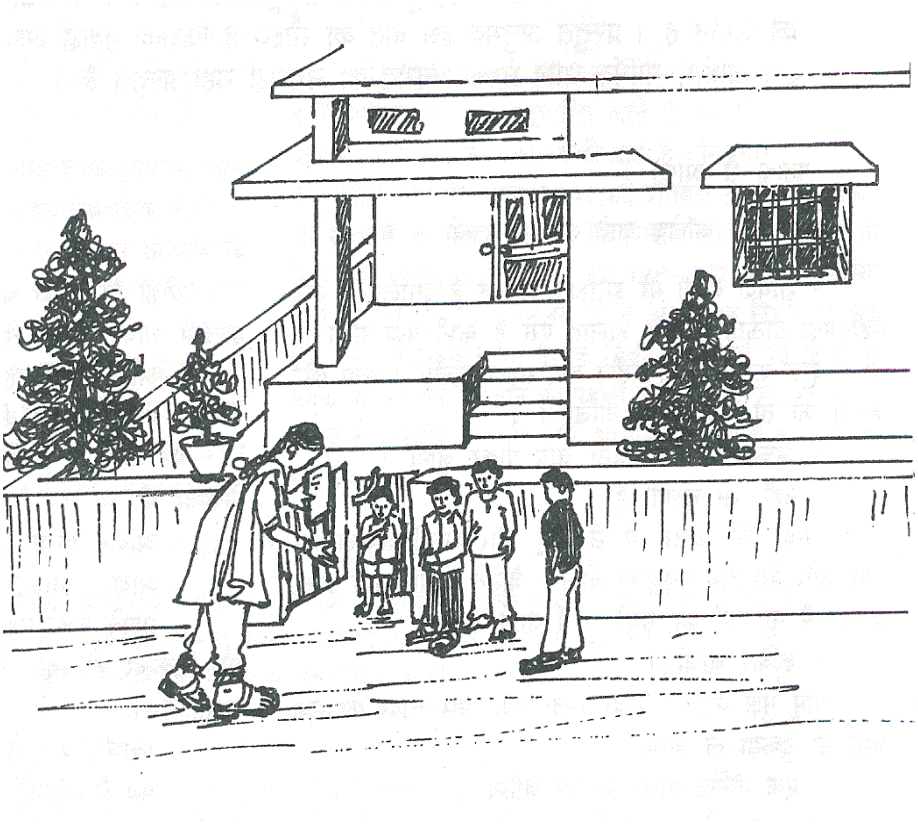

आता था अब छह फुट का हो चुका है । पापू और बंटी भी काफी लम्बे हो गए हैं । शाजी जो कभी तुतलाता था, अब बिल्कुल साफ बोलने लगा है, तीसरी क्लॉस में है । जब भी पास होता, मार्कशीट लेकर सीधा मेरे पास आता है । बीच में स्कूल छोड़कर दिल्ली साल-डेढ़ साल तक रहकर आया है । शाहिद ने अपना कारखाना खोल लिया। 18 साल का शाहिद उस्ताद बन गया है, पापू और बंटी उसी के कारखाने में काम करते हैं । पापू दो-तीन महीने पहले एक दिन आया

था । बोला - बाजी मेरा रविन्द्र मंच पर डांस है । ये तीन पास लाया हूँ आपके लिए । जरूर आइएगा ।

- अरे, आप इतने बड़े कलाकार हो गए क्या ?

- बाजी बस एक डांस ग्रूप अपना प्रोग्राम दे रहा है । उसमें पापा के दोस्त भी थे । उन्होंने मेरा नाम भी लिख लिया।

मैं अपने भाईयों के साथ उसका प्रोग्राम देखने गई । वहां एक डांस कम्पीटीशन हो रहा था। पापू लास्ट में आया और एक फिल्मी गाने पर उसने थिरकना शुरू किया। मुझे हैरत हो रही थी कि ये इतना अच्छा डांस भी कर सकता है । पूरा रवीन्द्र मंच तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा । पापू को फर्स्ट प्राइज मिला । स्टेज से उतरकर हंसता हुआ मेरे पास आया।

- देखिए बाजी ।

- पापू तुमने तो कमाल कर दिया।

हर तरफ उसके डांस की तारीफ हो रही थी । पापू ने रास्ते में बताया - बाजी पापा बहुत अच्छा कमाने लगे हैं । हमारा कारखाना भी अच्छा चलता है । हमने दूसरा किराए का मकान ले लिया है । उसमें चार बड़े कमरे हैं । खिड़कियों में कांच लगे हैं और बाजी आपके घर जैसा फर्श हो रहा है । नीचे के कमरे में हमारा कारखाना है ।

- अच्छा ये तो बहुत खुशी की बात है ।

- बाजी, आप क्या कर रही हैं ?

- पापू हम दुबारा पढ़ना शुरू करेंगे । मैं कुछ दिनों में अपनी पीएच. डी. सबमिट कर दूंगी ।

- पीएच. डी. क्या है ?

- किताब लिख रही हूँ, बस वो पूरी होने वाली है । कल शाहिद को मेरे पास भेजना ।

- अच्छा बाजी ।

दूसरे दिन शाहिद आया ।

- शाहिद मुझे तुमसे कुछ कहना है ।

- जी बाजी ।

- अब तुम अच्छा कमाने लगे हो । किसी से बात करके शाम को घर पर पढ़ने लग जाओ ।

- बाजी आप ... ।

- हां मैं तो तुम्हें पढ़ाऊंगी ही मगर कब, बता नहीं सकती। शायद दो-तीन महीने और लग जाएं ।

- बाजी किससे बात करूं ?

- आपके यहां रिजवान आते हैं ना । उनसे बात करो, वो ट्यूशन पढ़ाते हैं ।

- जी बाजी ।

- मिलेंगे तो बात करूंगा ।

- नहीं, आप अभी उनके घर जाकर बात करिए और जो बात हो मुझे कल आकर बताइए ।

वो हामी भरकर चला गया । दूसरे दिन शाम को आया।

- बाजी रिजवान भाई से बात हो गई है । वो आज से पढ़ाने आएंगे । हम सब बहिन-भाईयों के पांच सौ रुपये लेंगे।

- ठीक है ।

तकरीबन महीना भर गुजर गया । मेरी थीसिस सबमिट हो चुकी थी । एक दिन शायदा बाजी नियाज का बुलावा देने आई। उनसे पता चला कि शाहिद और बंटी रिजवान से बिल्कुल नहीं पढ़ते । पापू कभी-कभी पढ़ता है और शीबा, शाजी रोज पढ़ते हैं ।

- जरफिशां नियाज में जरूर आना।

- जी आऊंगी ।

- शाम को पापू लेने आ गया था । मैं और भैया उसके साथ गए । अब उनका घर हमारे घर से थोड़ी और दूर हो गया। गुलाबी रंग का बड़ा सा मकान है । अन्दर घुसते ही सामने कारखाना नजर आया । परसान पर शाहिद बैठा कुछ काम कर रहा था ।

- बाजी, आदाब ।

- आदाब क्या बना रहे हो ?

- नीलम की खड़ बना रहा हूँ । उसने पुडिया मेरी तरफ करते हुए कहा । क्रीम रंग की पुडिया में नीलम के नगीने चमक रहे थे ।

- बहुत खूबसूरत हैं, सब तुमने बनाए ?

- जी । ऊपर चलिए, आपका काफी देर से इन्तजार हो रहा है ।

- जी । मैं थोड़ी लेट हो गई ।

बड़े से साफ-सुथरे कमरे में दरी बिछी हुई थी।

- बैठिए ।

शाहिद पापू के अलावा बंटी, शीबा, शाजी, सिकन्दर सभी आ गए ।

- सलाम वालेकुम बाजी । - वालेकुम अस्सलाम । कैसे हैं आप सब ?

- अच्छे हैं बाजी । बाजी आपकी किताब पूरी हो गई?

- हां, हो गई ।

- अब आप हमें पढ़ाएंगी ? शाजी ने सवालिया नजरों से मेरी तरफ देखते हुए पूछा ।

- अभी तो आप लोग रिजवान से पढ़ रहे हो ना । उनसे पढ़िये ।

- नहीं बाजी, वो दो दिन से नहीं आ रहे ।

- क्यों ?

- क्योंकि हम उनसे नहीं पढ़ते । बंटी ने हंसते हुए जबाव दिया ।

- शाहिद क्या हुआ ?

- बाजी वो अच्छा नहीं पढ़ाते। बस आकर कॉपी में काम दे देते हैं । दूसरे दिन आकर चैक कर लेते हैं ।

बीच में शायदा बाजी नियाज की खीर ले आई ।

- अच्छा, कल से आप लोग शाम को घर पर आ जाइएगा।

दूसरे दिन शाहिद, पापू, शाजी, सिकन्दर और शीबा पांच बजे आ गए थे । शीबा गुन्चा के घर से नसीम, नदीम और रजिया को ले आई।

- आप सब लोग दालान में चलिए मैं दरी लेकर आती हूँ ।

घर के स्टोर में एक पुरानी दरी पड़ी थी । उसको दालान में बिछा लिया ।

- शाहिद आज आपने काम नहीं किया क्या ?

- किया था जल्दी उठा दिया।

- अरे क्यों ।

- बाजी मैं, पापू और बंटी आपसे अभी सात-आठ दिन ही पढ़ेंगे। फिर हमें एक खड़ बनानी है । उसमें थोड़ा वक्त लगेगा ।

- कितना

- महिना डेढ़ महिना ।

- अच्छा ।

- सुबह कितने बजे काम पर बैठोगे ?

- नौ बजे से ।

- और शाम को कब तक करोगे ?

- दस-ग्यारह बजे तक ।

- इतनी देरी ?

- हां, बाजी । बस बीच में खाना खाने उठेंगे ।

- इतना काम क्यों कर रहे हो ?

- ये तन्जोनाइट की खड़ है। बाद में काम मिले नहीं मिले । इसलिए ये काम हाथ में ले लिया।

- अच्छा ठीक है ।

पांच-छह दिन तक ही वो तीनों आए। इस अरसे में मुझे ये पता लग चुका था कि पांच साल पहले पढ़ाया हुआ बहुत कुछ वो भूल चुके हैं । शाहिद पापू को गिनती याद थी । जोड़ना, घटाना आता है । हासिल में कहीं-कहीं गड़बड़ कर देते हैं । हिन्दी पढ़ना नहीं भूले थे और कुछ रिजवान से भी हिन्दी पढ़ते रहे ।

- अब आप पहाडा दुबारा याद करिए । शीबा नहीं आई, पापू।

- जी वो घर का काम कर रही है ।

- कल से उसे भी साथ लाना।

- अच्छा बाजी ।

दूसरे दिन वो आई । तुम शीबा तीन-चार दिन से आ नहीं रही ?

- जी बाजी, वो मैं आ नहीं पाती ।

- क्यों शीबा ?

- घर का काम एक घण्टे बाद हो जाएगा या तुम्हारी अम्मी कर लेगी।

- बाजी पापा आ गए, तो वो भेजते नहीं हैं ।

- क्यों ?

मैं बाहर तक उन्हें छोड़कर आई और बिस्तर में चली गई । आज बार-बार मन में ख्याल आ रहा है कि शैन्की, गुड़िया, सोनल, मीनल के पास बेगिनती बेहिसाब गरम कपड़े हैं । अनवर के पास एक जर्सी क्यों नहीं ? शैंकी जब स्कूल जाता है जूते, मोजे, मफलर, कोट, दस्ताने पहने । घर के दरवाजे से गाडी तक ड्राइवर गोद में लेकर आता है । फिर भी कहता है मम्मी सर्दी लग रही है । आज स्कूल नहीं जाऊंगा । अनवर को सर्दी क्यों नहीं लगती है ? वो इस सर्दी में रोज रात को पढ़ने क्यों आ रहा है? शैंकी की दुनिया अलग, अनवर की दुनिया अलग । क्या कभी ये दो दुनियाएं एक हो पाएंगी? ये सोच रही हूं । क्या कल मैं इन्हें पढ़ा पाऊंगी । क्या ये कल पढ़ पाएंगे । ना मेरी कोई मंजिल, ना इनकी कोई मंजिल, सिर्फ एक सफर है । कब तक साथ चल पाएंगे ? पता नहीं ?

कहते हैं कि मोहल्ला अच्छा नहीं है। पूरे रास्ते में लड़के खड़े रहते हैं वो छेड़ते हैं ।

- तब स्कूल कैसे जाती हो, स्कूल छोड़ दिया क्या ?

- हां । हमारे मोहल्ले का माहौल अच्छा नहीं है, इसलिए पापा कहीं आने जाने नहीं देते ।

- तो बस पांचवीं करके रह जाओगी । मैने झुंझलाते हुए कहा ।

- क्या करूं ? शाहिद, पापू और बंटी ने आना बन्द कर दिया । उन्होंने कहा कि वो दस दिसम्बर के बाद से आएंगे । शीबा को पापा नहीं भेजते । वसीम, नदीम, रजिया, रजा, सिकन्दर, शाजी और फरहा रोज शाम को आ जाते हैं । उन्हें पढ़ाते हुए अभी पन्द्रह दिन हुए हैं ।

इसी बीच में मैं संधान शोध केन्द्र में इन्टरव्यू दे आई थी। चार नवम्बर को शाम को संधान से एक लेटर आया । आपका सलेक्शन हो गया है । पांच तारीख को मैंने संधान ज्योइन कर लिया।

- बाजी आप कहां चली गईं थीं ?

- अब मैं भी काम पर जाने लगी हूँ । मैने हंसते हुए कहा।

- अच्छा, आपकी नौकरी लग गई है ?

- हां, आप लोग बैठिए मैं आती हूँ ।

- आज का दिन कैसा रहा ? ऊपर पहुंचते ही मम्मी ने पूछा ।

- अच्छा रहा ।

- क्या काम करना है तुम्हें ?

- ये तो नहीं जानती । दो-चार दिन जाऊंगी तभी बता पाऊंगी । अच्छा मम्मी मैं बच्चों को पढ़ा कर आती हूं । काफी देर से इन्तजार कर रहे हैं । यह कहकर मैं नीचे आ गई।

- हां रजिया कहां तक गिनती लिखी ।

- दस तक ।

- लाइए अब आगे की गिनती सीखते हैं । रजा, फरहा, सिकन्दर, वसीम आप भी इधर आ जाइए ।

- जी बाजी ।

मैंने ग्यारह से चौदह तक गिनती सबकी कॉपी में लिखी और समझा दी ।

- अब आप लिखिए । कुछ समझ में नहीं आए तो पूछ लीजिएगा । शाजी और वसीम अपनी-अपनी कापी दीजिए । इसमें मैंने कुछ बाकी के सवाल लिख दिए हैं, इन्हें करिए ।

आधे घण्टे बाद मैंने उनका काम देखा और उनकी छुट्टी कर दी और मैं खाना बनाने चली गई ।

कुछ दिन ऐसे ही गुजर गए । एक शाम मैंने मम्मी को याद दिलाते हुए कहा - मेरी डॉक्टर साहब से बात हो गई है, आप सुबह भाई जान के साथ हॉस्पिटल चली जाइएगा । डॉक्टर साहब आपका चैकअप करके ऑपरेशन की डेट बता देंगे ।

- दोनों आंखों में एक साथ मोतियाबिन्द उतरने से मुझे काफी परेशानी हो रही है । अब तो बस जल्दी से आपरेशन हो जाए ।

- हां जी जल्दी ही हो जाएगा ।

सुबह मैं संधान चली गई और मम्मी हॉस्पिटल । शाम को लौटने पर पता चला डॉक्टर साहब ने कुछ टेस्ट करवाये हैं। रिपोर्ट देखकर 15 तारीख को आपरेशन करेंगे ।

- जरफिशां तुम सुबह खाना बनाती हो, फिर संधान जाती हो, आकर बच्चों को पढ़ाती हो, फिर शाम को खाना बनाती हो । बेटा, कैसे करोगी ये सब । जब तक मैं ठीक नहीं हो जाती, बच्चों को पढ़ाना छोड़ दो ।

- मम्मी आप फिक्र मत करिए । सब हो जाएगा ।

- क्यों हो जाएगा ? नौकरानी भी नहीं आ रही है । तुम अकेली क्या-क्या करोगी । बच्चों को कुछ दिनों के लिए मना कर देना ।

- मम्मी बच्चों को पढ़ाने से फर्क नहीं पड़ता ।

ये कहकर मैं नीचे चली गई । जब बच्चों को पढ़ा चुकी तो मैने शाजी से कहा - शाजी अगर आपके घर की तरफ ऐसे बच्चे रहते हैं जो स्कूल नहीं जा पाते तो उन्हें अपने साथ यहां ले आना ।

- अच्छा बाजी ।

दूसरे दिन शाम को जब वो आया तो उसके साथ बारह बच्चे और थे ।

- आप सब बैठिये, मेरा नाम जरफिशां है । मैं सोलह क्लास पढ़ चुकी हूं । उन बच्चों को पढ़ाना चाहती हूं जो किसी भी वजह से स्कूल नहीं जा पा रहे हैं । अब आप में से एक-एक जना मुझे अपने बारे में बताए ।

- क्या बताएं ? एक बच्चा बोला ।

- कुछ भी अपना नाम, उम्र, घर के बारे में, काम के बारे में, ऐसे ही जो आप अपने बारे में बोलना चाहें ।

मैं रफीक । उम्र चौदह साल है । नगीनों का काम करता हूं । पढ़ना नहीं आता लेकिन अपना नाम लिख सकता हूँ ।

- मेरा नाम रियाज है । मैं ग्यारह साल का हूँ । कभी स्कूल नहीं गया, दिन भर खेलता हूं ।

- इब्राहिम हूं । मेरी उम्र चौदह साल है । नगीनों का काम करता हूँ । पढ़ना नहीं आता लेकिन अपना नाम लिख सकता हूं।

- मेरा नाम रियाज है। मैं ग्यारह साल का हूं । कभी स्कूल नहीं गया, दिन भर खेलता हूँ ।

- इब्राहिम हूं । मेरी उम्र तेरह साल है । पढ़ाई तो पहली क्लॉस लिख लो । नगीनों का काम करता हूँ । बड़ा होकर यही काम करूंगा ।

- वसीम मेरा नाम है । छठी कक्षा में पढ़ता हूँ । मुस्लिम स्कूल में ।

- मैं शाहिद हूं । उम्र दस साल । घर में पांच भाई, पांच बहिनें, दो अम्मी और एक पापा हैं । मदरसे जाता हूँ ।

- अनवर मेरा नाम है । पापा सब्जी का ठेला लगाते हैं। मैं नगीनों का काम करता हूँ । स्कूल कभी नहीं गया।

- शोएब, मैं आठ-नौ साल का हूं । मदरसे जाता हूं कभी-कभी । मम्मी-पापा और तीन बहने हैं । मैं बड़ा होकर चीजवाला बनूंगा ।

- मैं शमशूद्दीन हूं । पन्ने का काम करता हूं, नहीं सीखता हूं । पचास रुपये महीना मिलता है । कभी स्कूल नहीं गया।

- मेरा नाम फईम। ग्यारह साल का हूं । नौ बजे से चार बजे तक नगीनों का काम करता हूँ । स्कूल नहीं गया । घर में चार बहिन, एक भाई और अम्मी-अब्बू हैं ।

- मैं साजिद उम्र मुझे पता नहीं । अब्बा लोहे की अलमारी बनाते हैं । मैं मदरसे जाता हूं, नहीं जाता था, अब छोड़ दिया।

- मैं राज खान हूं । मैं तेरह साल का हूं । सातवीं में पढ़ता हूं । श्वेताम्बर स्कूल में ।

- अब्दुल साबिर मेरा नाम है । मैं माहवतान स्कूल में छठी में पढ़ता हूं ।

- अब्दुल समद हूं । महावतान स्कूल में दूसरी में पढ़ता हूं।

- बाजी हमें तो आप जानती हैं ।

- हां मैं जानती हूं । मगर ये सब तो नहीं जानते ना । आप भी बताइए ।

- शाजी, उम्र पता नहीं है । सात बहन-भाई हैं । मैं दूसरी क्लॉस में पढ़ता हूं ।

- रजा हूं, उम्र चौदह साल है । तीसरी तक पढ़कर छोड़ दिया । अब कुछ नहीं करता ।

- मैं फरहा हूं, कभी-कभी स्कूल चली जाती हूं ।

- मैं वसीम हूं, उम्र ग्यारह साल है, पढ़ता हूं कच्ची पहली में ।

- मैं नदीम हूं, उम्र चौदह साल, दूसरी में पढ़ता हूं ।

- समद, साबिर, मैराज और वसीम आप सब छठी-सातवीं क्लास में पढ़ते हैं और रोज स्कूल जा रहे हैं । मैं यहां उन बच्चों को पढ़ाना चाह रही हूं जो स्कूल नहीं जा पाते । इसलिए आप लोगों को मैं ज्यादा वक्त नहीं दे पाऊंगी और ना ही आपका होमवर्क या कोर्स करा पाऊंगी । हां, अगर आप अपनी गणित, हिन्दी, अंग्रेजी सुधारना चाहते हैं तो उतना पढ़ा दूंगी । अब आप एक-दो दिन देख लीजिए । आपको लगे कि आप यहां आकर कुछ सीख रहे हैं तो ठीक है वरना मत आइएगा। ये फैसला आप खुद करिए । अच्छा अब आप सब कॉपी निकालिए ।

इतने में ही फोन की घंटी बजी ।

- हैलो ।

- हैलो । मैं जितेन्द्र बोल रहा हूं ।

- नमस्ते भैया, कैसे हैं आप ?

- अच्छा हूं, क्या कर रही थीं ?

बच्चों को पढ़ा रही हूं ।

- अच्छा सुन, आजकल शादियां हो रही हैं । तुझे पता है मैं मिलनी (पैसे) नहीं लेता। कुछ रिश्तेदारों ने मेरे पैसे मम्मी को दे दिए बहत्तर रूपये हैं । तू बहत्तर रूपये की कोई चीज इन बच्चों को मंगवा कर दे देना। मैं कल तुझे पैसे भिजवा दूंगा।

- अच्छा भैया ।

- अच्छा रखता हूं ।

- और हां, उन्हें एक-एक खाली पेज और पेंसिल देकर उनसे कहें कि आपकी जो इच्छा हो, बनाइए । मुझे लगता है कि वो बहुत ही इन्टरेस्टिंग चीजें बनाएंगे ।

- अच्छा भैया ।

मैंने एक-एक खाली पेज उनको दे दिया और भैया के भेजे हुए रूपयों की कॉपी-पेन्सिलें मंगवा कर दे दी ।

दूसरे दिन संधान गई । फागी से लौटी संधान टीम अपने

अनुभव सुना रही थी । विचार-विमर्श के दौरान ये बात सामने आई कि वहां पर भी कुछ बच्चे 'जैम पॉलिशिंग' का काम कर रहे हैं। बातचीत में मेरे मुंह से निकल गया कि मैं घर पर उन बच्चों को पढ़ाती हूं जो ये काम करते हैं । शारदा जी ने खुश होते हुए कहा - अच्छा, कितने बच्चे हैं ?

- तेरह ।

- ये तो कमाल है । अभी अगर बातचीत नहीं होती तो हमें पता भी नहीं चलता । कब से पढ़ा रही हो ?

- जी तीन महीने से ।

- वो बच्चे रेगूलर आ रहे हैं ।

- जी, मैंने छह साल पहले भी पढ़ाया था। फिर छोड़ दिया अब वापिस पढ़ाना शुरू किया है ।

- इट्स ग्रेट, मेरी तो सारी थकान उतर गई । जरफिशां संधान में काम करने की वजह से उन्हें पढ़ाना मत छोड़ना बल्कि यहां के काम के बजाए उनकी पढ़ाई को प्राथमिकता देना । चाहो तो यहां से जल्दी चली जाना ।

- जाते वक्त उन्होंने कुछ किताबें बच्चों के लिए दीं । शाम को बच्चे किताबों को देखकर बहुत खुश हो गये ।

- जरफिशां अगर आप कहो तो मैं भी इन बच्चों के साथ लग जाऊं । चचीजान ने आकर मुझसे पूछा ।

- हां, हां जरूर, क्यों नहीं । बैठिए ।

- नहीं अभी तो मैं खाना बनाऊंगी । कल से जल्दी खाना बना लूंगी फिर आपके पास आऊंगी ।

- जी, अच्छा ।

दूसरे दिन से चचीजान भी बच्चों के साथ पढ़ने लगी ।

- फईम, आप सब लोगों के घरवालों को पता है कि आप यहां पढ़ने आते हैं ?

- हां, बाजी । वो कुछ पूछते नहीं, कहां जा रहे हो ? क्या पढ़ रहे हो ? कौन पढ़ा रहा है ?

- आपके बारे में हमने उन्हें बता दिया ।

- मेरी आपा कह रही थी कि बाजी को घर लेकर आना।

- अच्छा एक दिन चलूंगी ।.

- जब आप यहां नहीं आते थे तो क्या करते थे ।

- कुछ नहीं मोहल्ले में इधर-उधर फिरते थे । क्रिकेट खेलते थे सड़क पर और सुबह काम पर चले जाते ।

- किसी दिन आपका खेल देखूंगी ।

- बाजी एक दिन आपके पीछे वाले मैदान में क्रिकेट का मैच रख लें ।

- अच्छा देखेंगे ।

- समद, मैराज, साबिर आप तीनों एक साथ बैठिए और ये कुछ गुणा के सवाल हैं इन्हें करिए । शाजी, नदीम, वसीम आप लोग एक साथ बैठिये और ये जोड़ करिए । कल जैसे मैने बताया था वैसे ही करिए । आप सब बच्चे एक गोल घेरा बनाकर बैठ जाइए ।

- बाजी, नई किताब में से पढ़ाईए ।

- अच्छा, देखिए यह 'ज' है और यह इस तरह बनता है । यह 'ल' है और यह इस तरह बनता है । 'ज' से यह क्या बना हुआ है ?

- जग । दो-चार बच्चे जोर से बोले ।

- और 'ल' से ?

- लड्डू ।

- हां इब्राहिम आप बताइए ।

वो चुप रहा फिर एकदम बोला - 'ज' से जलेबी और 'ल' से लड्डू । सब हंसने लगे ।

अब ज्यादातर बच्चे 'ज', 'जा', 'ल', 'ला', 'जल', 'जाल', 'जाला', 'जला', 'लाज', 'लाल', 'लाला', 'लजा' लिख लेते हैं । फईम, नदीम, रजिया कभी-कभी जाल को जाला और जाला को जाल पढ़ जाते हैं । रजा, रफीक और इब्राहीम ''अब बादल आ'' भी सीख चुके हैं । रफीक तो 'बाबा', 'बाद', 'बल', 'दल', 'बाल', 'बाजा', 'बज', 'बजा' भी सीख चुका है। शमशूद्दीन बहुत धीरे-धीरे सीख रहा है । 'ज' को 'ल' बताता है और 'ल' को 'ज' ।

आजकल बहुत सर्दी पड़ रही है । किसी भी बच्चे को पैरों में मोजे या कानों पर मफलर नहीं है । अनवर रोज एक मटमैले पतले से शर्ट में आता है ।

तुम जर्सी पहन कर क्यों नहीं आते अनवर ?

- बाजी ठण्ड नहीं लगती । कहकर नजरें झुका लीं ।

पढ़कर जब बच्चे जाने लगे तो मैं अनवर को दूसरे कमरे में ले गई ।

- अनवर आपके पास जर्सी है ।

- हां है ।

- सच बताइए ।

- हां बाजी है ।

- किस रंग की है ।

- नीली ।

- कल पहनकर आइएगा ।

- अच्छा ।

दूसरे दिन अनवर बहुत पुरानी नीले रंग की जर्सी पहन कर आया जो कई जगह से फट रही थी ।

-कॉपी लेकर मेरे पास आ जाओ, दिखाइए आपने बादल कैसे बनाया । हां ठीक है । 'द' बनाना देखिए ।

मैंने उसके हाथ पेन्सिल पकड़ाकर उसका हाथ अपने हाथ में लेकर कॉपी पर लिखना शुरू किया । आस्तीन से फटी जर्सी को बार-बार मुझसे छुपाने की नाकाम कोशिश कर रहा है । अपनी नाकामियाबी को देखकर बोला - बाजी मैं अपने आप लिख लूंगा ।

मेरे हाथ से उसका हाथ छूट गया ।

- जरफिशां बच्चे पढ़ चुके हों तो इन्हें ऊपर लाना ।

- जी ।

- आप सब ऊपर आ जाइए । कहकर मैं भारी मन से ऊपर चली गई ।

सब बच्चे ऊपर आकर बाहर ही रूक गए ।

- अन्दर आ जाइए । मम्मी ने उन्हें प्यार से पुकारा । बच्चे अपनी-अपनी चप्पलें उतार कर अन्दर आ गए । मम्मी ने सबको मिठाई और गरम-गरम मूंगफली खिलाई । बच्चे खुश हैं ।

अच्छा बाजी, चलें ।

मैं बाहर तक उन्हें छोड़कर आई और बिस्तर में चली गई । आज बार-बार मन में ख्याल आ रहा है कि शैन्की, गुड़िया, सोनल, मीनल* के पास बेगिनती बेहिसाब गरम कपड़े हैं । अनवर के पास एक जर्सी क्यों नहीं ? शैंकी जब स्कूल जाता है जूते, मोजे, मफलर, कोट, दस्ताने पहने । घर के दरवाजे से गाड़ी तक ड्राइवर गोद में लेकर आता है । फिर भी कहता है मम्मी सर्दी लग रही है । आज स्कूल नहीं जाऊंगा। अनवर को सर्दी क्यों नहीं लगती है ? वो इस सर्दी में रोज रात को पढ़ने क्यों आ रहा है ? शैंकी की दुनिया अलग, अनवर की दुनिया अलग । क्या कभी ये दो दुनियाएं एक हो पाएंगी? ये सोच रही हूं । क्या कल मैं इन्हें पढ़ा पाऊंगी । क्या ये कल पढ़ पाएंगे । ना मेरी कोई मंजिल, ना इनकी कोई मंजिल, सिर्फ एक सफर है । कब तक साथ चल पाएंगे ? पता नहीं? ◆

* हमारे पड़ोस में एक व्यापारी रहते हैं । उनके बच्चे हैं ।